देशव्यापी शराबबन्दीकी योजना

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

१६ पृष्ठ
दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाजी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २६ मार्च, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

समाजवादी ढंगकी व्यवस्थाका मार्ग

कांग्रेस द्वारा अपने आवड़ी-अधिवेशनमें पास किये गये प्रस्तावने लोगोंका काफी ध्यान खींचा है, फिर भी यह कहना अुचित होगा कि केवल अेक ही राजनीतिक पार्टी भारतमें समाजवादी ढंगकी व्यवस्था कायम नहीं करना चाहती। भारतमें राजनीतिक विचार-वाला अैसा शायद ही कोअी जिम्मेदार दल होगा, जिसे यह लक्ष्य अपील नहीं करता। अधिकतर लोगोंको अैसा लगता है कि यह लक्ष्य भारतीय संविधानकी प्रस्तावनामें समाया हुआ है। लेकिन संविधानके अपनाये जानेके पहले भी श्री जवाहरलाल नेहरूने हमारे राष्ट्रीय ध्येय अैसे शब्दोंमें (जनवरी १९४८ में अ० भा० कांग्रेस कमेटीकी आर्थिक कार्यक्रम समिति द्वारा कांग्रेस प्रेसिडेन्टके सामने पेश की गअी रिपोर्टमें) बताये थे, जिन्हें आज भी सामान्यतः सब कोअी स्वीकार करेंगे :

> "हमारा ध्येय अैसी राजनीतिक व्यवस्थाका विकास करनेका होना चाहिये, जिसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रताके साथ शासनकी कार्यक्षमताका मेल हो; साथ ही अैसी आर्थिक रचना खड़ी करनेका ध्येय हमें अपने सामने रखना चाहिये, जिसमें खानगी अेकाधिकारों और कुछ लोगोंके हाथमें सम्पत्तिके अेकत्रीकरणकी प्रक्रियाके बिना अधिकसे अधिक अुत्पादन हो और जो शहरी और ग्रामीण अर्थ-रचनामें अुचित संतुलन कायम करे। अैसी समाज-व्यवस्था खानगी पूंजीवादकी परिग्रहशील अर्थ-रचना और सर्वसत्ताधारी राज्यकी अेक सांचेमें ढली हुअी अर्थ-रचनाका अेवज हमें दे सकती है।"

कसौटियां

लगभग ४० वर्ष पहले लिखते हुअे श्री बर्ट्रान्ड रसेलने अपनी पुस्तक 'प्रिन्सिपल्स ऑफ सोशियल रीकन्स्ट्रक्शन' में निश्चित रूपमें कहा था कि किसी भी आर्थिक व्यवस्थाका सामाजिक मूल्य आंकनेके लिअे अुसे चार मुख्य कसौटियों पर कसना चाहिये :

> "क्या अुस व्यवस्थामें (१) अधिकसे अधिक अुत्पादन होता है, या (२) न्यायपूर्ण बंटवारा होता है, या (३) अुत्पादकोंको जीवन-निर्वाहकी आवश्यक सुविधायें मिलती हैं, या (४) अधिकसे अधिक स्वतंत्रता और शक्ति तथा प्रगतिको अधिकसे अधिक अुत्तेजन प्राप्त होता है।"

अिन कसौटियोंका लगभग अुन कसौटियोंसे मेल बैठता है, जिन्होंने दुनियाके देशोंके नेताओंको अेक नअी समाज-रचनाके विषयमें सोचनेकी प्रेरणा दी है। लेकिन अुसमें अेक मुख्य भेद यह है कि हमारे देशमें बहुत बड़े पैमाने पर बेकारी फैली होनेसे अधिकसे अधिक अुत्पादन बढ़ानेके ध्येयको बेकारीकी बुराअी दूर करनेके ध्येयके अधीन बना दिया गया है।

१

मुख्य क्षेत्र

अगर हम समाजवादका अर्थ आर्थिक जीवनके क्षेत्रमें लोकशाही करें, तो हमें निश्चित रूपसे यह देखना होगा कि अुस जीवनके सारे क्षेत्र लोकशाहीकी भावनासे अनुप्राणित हों। अिस जीवनका मुख्य क्षेत्र है खेती-अुद्योग, जिससे मोटे तौर पर लगभग आधी राष्ट्रीय आय प्राप्त होती है। यहां प्रश्न पूछा जा सकता है कि क्या समाजवादी ढंगकी व्यवस्थाका यह अर्थ है कि संपूर्ण जमीनका राष्ट्रीयकरण कर दिया जाय या तुरन्त सामुदायिक खेतीका आसरा लिया जाय? आज अधिकतर खेती स्वतंत्र रूपसे काममें लगे हुअे लोगों द्वारा की जाती है, जो जमीनकी छोटी-छोटी अिकाअियों पर काम करते हैं। अगर हम अूपर बताये व्यापक अुद्देश्यको ध्यानमें रखें, तो हम अिस अनिवार्य परिणाम पर पहुंचेंगे कि खेतीकी जमीनका राष्ट्रीयकरण करना या सारे देशमें सामुदायिक फार्म कायम करना नासमझी — और गैर-जरूरी — होगा। दूसरे साधनोंके जरिये भी सामाजिक नियंत्रण लगाये जा सकते हैं। अिस समय भारतके लगभग सारे राज्योंमें जमींदारोंके अधिकार खतम करने, बिचवैयोंका काम करनेवाले व्यक्तियोंको दूर करने या काश्तकारोंको जमीनका काश्तकारी हक देनेकी प्रक्रिया अमलमें लाअी जा रही है, जिसकी गतिको बढ़ाना चाहिये।

जमीन-सम्बन्धी नीति

अिसके साथ-साथ, अेक परिवार अधिकसे अधिक कितनी जमीन रख सकता है, अिसकी मर्यादा बांध दी जानी चाहिये। अिसका दूसरे सारे जरियोंसे होनेवाली आयकी मर्यादा बांधनेके सामान्य अिरादेके साथ मेल बैठना चाहिये। साथ ही जमीनकी कमसे कम मर्यादा भी तय करना जरूरी है, जिसके नीचे खेती अनुत्पादक और आर्थिक दृष्टिसे हानिकारक हो जाती है। अिन अनुत्पादक और हानिकारक जमीनोंसे तथा अधिकसे अधिक मर्यादा बांध देनेके बाद पुनर्विभाजनके लिअे अुपलब्ध अतिरिक्त जमीनोंसे अैसे संयुक्त ब्लाक बनाये जायें, जो जमीन पर काम कर रहे बेजमीन मजदूरों और आर्थिक दृष्टिसे हानिकारक जमीनें रखनेवालोंको खेतीके लिअे दिये जायं। अिन संयुक्त अिकाअियोंकी खेती सहकारी खेती-समितियोंके जरिये होनी चाहिये। राज्य-सरकारोंको चाहिये कि वे विकासके अेक योजना-बद्ध कार्यक्रमके अनुसार अिस अुद्देश्यके लिअे या सुधार कर खेतीके लायक बनाअी हुअी बंजर, रेगिस्तानी या वनप्रदेशकी जमीनों पर खेती करनेके लिअे सहकारी खेती-समितियोंकी स्थापनाको प्रोत्साहन दें। विकास-कार्यक्रमको अपने क्षेत्रके भीतर काश्तकारोंकी खेती-समितियों, स्वेच्छापूर्वक बनाअी हुअी जमीन-मालिकोंकी खेतीसमितियों या संयुक्त ग्राम-व्यवस्थाको स्वीकार करनेवाली

www.vinoba.in

समितियोंको भी अपने भीतर शामिल कर लेना चाहिये। सरकारों द्वारा दी जानेवाली मदद आर्थिक और व्यवस्था-सम्बन्धी दोनों प्रकारकी होनी चाहिये और बदलेमें अिन समितियोंको सामाजिक नियंत्रण स्वीकार करना होगा, यानी राष्ट्रीय हितकी दृष्टिसे बनाओ गओ समान नीति पर स्वेच्छासे अमल करना होगा।

लोकशाहीका सामाजिक आधार

लेकिन संभव है किसान-समाजका अेक बड़ा वर्ग अिस कार्यक्रमके दायरेसे बाहर रहे। फिर भी अिस बातकी संभावना नहीं है कि अिनमें कोओी समाज-विरोधी तत्त्व होंगे। सच पूछा जाय तो, जैसा कि अेक सामाजिक विचारकने कहा है, केवल "अैसा समाज ही, जो मुख्यत: ग्रामीण है, लोकशाहीका सुरक्षित सामाजिक आधार रखता है।" समाजका यह तबका अधिकतर अैसे लोगोंका है, जिन्हें जीवनकी आवश्यक सुविधायें प्राप्त नहीं हैं, जिनकी अर्थ-रचना पूरी तरह विकसित नहीं है, जिनके पास बहुत थोड़ी साधन-सामग्री है और जो आम तौर पर भयंकर शोषणके शिकार बने रहते हैं।

अिस सदीके आरंभमें आयरलैण्डमें, जो अुस समय स्वतंत्र नहीं था, अिसी तरहकी स्थितिका सामना करनेके लिअे अुसके कवि-द्रष्टा-राजनीतिज्ञ जॉर्ज डब्ल्यू० रसेलने "मजदूरों और अुत्पादकोंके अैसे अनेक स्वतंत्र संघ" खड़े करनेकी कल्पना की थी, "जो राष्ट्रीय समाजवादकी समानार्थक विराट् सामान्यताको जन्म देनेके बजाय अधिक सौन्दर्य, अधिक सुख और अधिक आरामको जन्म दें।"

ये सहकारी समितियां, जिन्हें हम भारतमें भी विकसित होते देखना चाहते हैं, ग्रामीण क्षेत्रोंमें अुत्पादन, खपत और वितरणसे सम्बन्ध रखनेवाली प्रवृत्तियां हाथमें लेंगी और जैसे-जैसे वे अपने ध्येयोंमें अधिक व्यापक बनेंगी, वैसे-वैसे अपने सदस्योंको अिस बारेमें अधिक जाग्रत बनायेंगी कि अुनके हित और सारे समाजके हित अेक ही हैं। जब हम केवल कल्याण-राज्यकी नहीं, बल्कि समाजवादी ढंगकी समाज-रचनाकी योजना बनाते हैं, तब सामूहिक विकासको अधिकाधिक यह स्वरूप अख्तियार करना चाहिये।

कार्यक्रमकी रूपरेखा

अिस तरहके विकासके लिअे सारे पहलुओं पर विचार करके अेक समुचित कार्यक्रम बनाया जाना चाहिये। अुधार पूंजी प्राप्त करने और बाजारमें माल बेचनेके क्षेत्रमें — ये दो कृषि-अुत्पादकके जीवनके अत्यंत महत्त्वपूर्ण पहलू हैं — राज्य द्वारा बनाये जानेवाले अैसे कार्यक्रमकी मोटी रूपरेखा क्या हो, यह रिजर्व बैंक ऑफ अिंडियाकी रूरल क्रेडिट सर्वे रिपोर्टमें बताया गया है। लेकिन कृषि-व्यवस्थाके कुछ अैसे पहलू भी हैं, जिन्हें यह रिपोर्ट नहीं छूती — जैसे, जमीनकी रक्षा, सिंचाओी, पशु-पालन। जैसी कि कांग्रेसकी आर्थिक कार्यक्रम समितिने आजसे सात बरस पहले हिमायत की थी, अेक योजनाबद्ध कार्यक्रमके अनुसार सहकारी समितियोंको प्रोत्साहन देकर अिन सब बातोंकी अुचित व्यवस्था की जा सकती है। अैसा कार्यक्रम बनायेंगे तो ही अगले १० बरसमें हम योजना-कमीशन द्वारा हालमें प्रकट किये गये अिस संकल्पको पूरा करनेकी आशा रख सकते हैं कि हम अुत्पादनकी मात्रा दुगुनी कर देंगे और अुसके साथ देशकी प्रति मनुष्य आय भी दुगुनी कर देंगे। केवल तभी हम ग्रामीण क्षेत्रमें अुन लोगोंको अधिकाधिक कामधन्धा देनेकी आशा रख सकते हैं, जो अर्ध-बेकार हैं या जिन्हें अमुक मौसममें जमीन पर काम नहीं होता। खेतीको अैसे आधार पर, जो स्वावलंबन और परस्पर सहायताकी भावनाको अुत्तेजन देता है और साथ-साथ शोषणकी गुंजाअिशको अगर पूरी तरह खतम नहीं करता तो कम जरूर करता है, मदद दिये बिना देशकी प्रति मनुष्य आयमें वृद्धि करनेकी कोओी आशा नहीं रखी जा सकती।

सामाजिक न्याय

लोकशाही, जैसा कि अेक लेखकने कहा है, तभी आगे बढ़ेगी जब वह सामाजिक न्यायके ध्येयको आगे बढ़ानेके लिअे लोगों द्वारा पैदा की हुओी प्रत्येक संस्थाका अुपयोग करना सीखेगी। सहकारी समितियों जैसी अिन संस्थाओंका, जिन्हें अपनानेकी अूपर सिफारिश की गओी है, अुस प्रक्रियाके अेक अंगके रूपमें पूरा-पूरा अुपयोग किया जाना चाहिय, जिसके जरिये लोकशाहीके सामाजिक आदर्श सिद्ध किये जाते हैं। अिस सन्दर्भमें अेक केन्द्रित तंत्रके मार्गदर्शनमें किया जानेवाला खेतीका राष्ट्रीयकरण या सामुदायीकरण हमारे संविधानके बुनियादी अुद्देश्योंके बिलकुल खिलाफ जायगा और व्यवहारमें कट्टर तथा अव्यावहारिक सिद्ध होगा। जो पद्धति हम अपनायें वह गुलामीकी दिशामें ले जानेवाली नहीं होनी चाहिये; वह प्रत्येक व्यक्तिको अधिक स्वतंत्रता तथा अधिक पूर्ण और बेहतर जीवनके मार्ग पर ले जानेवाली होनी चाहिये।

केवल खेतीके क्षेत्रमें ही हमें व्यवस्था और संगठनका सहकारी स्वरूप दाखिल करने और अुसे विकसित बनानेकी योजना नहीं करनी है। खुद सहकारके विषयकी चर्चा करनेवाले अेक प्रकरणको छोड़ दें, तो योजना-कमीशनने अपनी रिपोर्टमें १६ प्रकरणोंमें अिस बातका विवेचन किया है कि आर्थिक प्रवृत्तिके विभिन्न रूपोंके लिअे सहकारी पद्धति कैसे अनुकूल हो सकती है। योजना-कमीशनने डेरी फार्म और बागवानी, मच्छीमारी, जंगलोंमें झाड़ काटने और जंगलमें पैदा होनेवाली चीजें अेकत्रित करने, छोटे और बड़े निर्माण-कार्योंके लिअे मजदूर मुहैया करने, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रोंमें मकान बनाने और अन्तमें ग्रामोद्योगों, दस्तकारियों तथा छोटे पैमानेके अुद्योगोंको अधिक अच्छी तरह चलानेके लिअे व्यवस्था और संगठनके सहकारी स्वरूपको अपनानेकी सिफारिश की है।

सन्तुलित प्रगति

कुछ बातोंमें कांग्रेसकी आर्थिक कार्यक्रम कमेटी अिससे भी आगे बढ़ गओी है। अुसने यह राय जाहिर की है कि अमुक क्षेत्रोंमें "किसी व्यक्तिको स्वतंत्र रूपमें कोओी सरकारी मदद न दी जाय, केवल अुसकी सहकारी समितिके जरिये ही अैसी मदद अुसे दी जाय।" अुस कमेटीकी रायमें सन्तुलित प्रगतिशील अर्थ-रचनाकी प्राप्तिके लिअे मालका वितरण सहकारी पद्धतिसे होना जरूरी है। अैसी अर्थ-रचनामें नियमित वितरण देशकी व्यापक आर्थिक योजनाका अभिन्न अंग होगा। कमेटीने यह सिफारिश की थी कि जरूरी होने पर यातायात, गोदाम वगैराकी विशेष सुविधायें देकर राज्य अिस प्रक्रियाको प्रोत्साहन और सहायता दे।

अन्य देशोंमें भी समाजवादी व्यवस्थाके लिअे योजना बनानेवालोंने अैसा ही रुख अपनाया है। सन् १९४८ में फेबियन सोसायटी द्वारा प्रकाशित 'कलेक्शन ऑफ अेसेज़' में यह मत प्रकट किया गया है कि "अुद्योगकी स्वेच्छासे अपनायी गओी सहकारी पद्धति, अुत्पादन और वितरण दोनों दृष्टियोंसे, . . . अर्ध-सहकारी ढंगके अुद्योगोंके बनिस्बत अुनके (समाजवादियोंके) ध्येयसे ज्यादा नजदीक है। सहकारको केवल राज्यकी मालिकीकी दिशामें ले जानेवाला अेक कदम माननेके बजाय अुन्हें राज्यकी मालिकी और नियंत्रणको, कमसे कम कुछ क्षेत्रोंमें, अधिक पूर्ण सहकारी समाजवादी व्यवस्थाकी दिशामें ले जानेवाला पहला कदम मानना चाहिये।"

अुसी वर्ष ब्रिटिश मजदूर-पार्टीने अपनी नीतिके विषयमें जो वक्तव्य प्रकट किया, अुसमें पार्टीके ध्येयकी व्याख्या अिस प्रकार की गओी है: अुत्पादन, वितरण और विनिमयके साधनोंकी 'समान' मालिकीके आधार पर हाथ या दिमागसे काम करनेवाले मजदूरोंके लिअे अुनके अुद्यमके पूरे फल प्राप्त करना। अिस तरह यहां यह

www.vinoba.in

वस्तु स्वीकार कर ली गओी है कि राष्ट्रीयकरण अपने-आपमें समाजीकरणकी पूर्वशर्त नहीं है।

सहकारी आन्दोलनकी रचना लोगोंको अनुके द्वारा चलाये जा रहे अुद्योग-धन्धोंमें आजादीके साथ हिस्सा लेने और अुनका अपनी अिच्छाके अनुसार नियंत्रण करनेकी सुविधा देती है; अिसके सिवा अुत्पादक अुपभोक्ताओंके ज्यादा घनिष्ठ संपर्कमें आते हैं और अिसलिअे धन्धेका ज्यादा सही नियंत्रण कर सकते हैं। राज्य द्वारा चलाये जानेवाले अुद्योग-धन्धोंमें यह बात नहीं होती। अेक बात और है। राज्य या नगर-समितियों द्वारा चलाये जानेवाले अुद्योग-धन्धोंके बजाय सहकारी धन्धोंमें, धन्धेके लाभका बंटवारा ज्यादा प्रत्यक्ष और सामाजिक दृष्टिसे ज्यादा अच्छा होता है। अिसलिअे थोक और फुटकर दोनों प्रकारके व्यापारकी अैसी व्यवस्थाका विकास करनेकी जरूरत है जिसका संचालन अुपभोक्ता खुद करेंगे, लेकिन जो राज्यके साथ घनिष्ठ संपर्क रखते हुअे काम करेगी। वह व्यापार-धन्धेके सामाजिक स्वामित्वके तंत्रका अेक संघटित अंग होगी। जैसा कि ब्रिटिश कोऑपरेटिव्ह यूनियनने अपनी नीतिकी व्याख्यामें कहा है, वितरणके क्षेत्रमें सामाजिक न्यायकी प्राप्तिका ठीक तरीका यही होगा। (अपूर्ण)

(अंग्रेजीसे) वैकुण्ठभाओी महेता

शान्तिकी अेक शर्त

ता० २५-१२-'५४ के 'हरिजन' में नौजवानोंके लिअे फौजी शिक्षाका जो विरोध किया गया है, अुसमें अेक हकीकतकी अुपेक्षा की गओी है, जो शान्तिकी स्थापनाके लिअे अुतना ही महत्त्व रखती है, जितना कि अहिंसा। समाज अनेकविध सिद्धान्तों, नीतियों और तत्त्वोंका अेक घनिष्ठ समन्वय है। अिनमें से अेकमें तब तक कोओी सुधार नहीं किया जा सकता, जब तक कि बाकीमें भी अुसके अनुरूप परिवर्तन न किये जायं। गांधीजीकी महत्ता अिसी बातमें थी कि वे अैसा परिवर्तन करनेके लिअे हमेशा तैयार रहते थे। अहिंसाको अपनानेवाली सरकारके बारेमें अुन्होंने नीचेकी बात कही है:

> "जब तक मुट्ठीभर धनवानों और करोड़ों भूखे रहनेवालोंके बीच बेअिन्तहा अन्तर बना रहेगा, तब तक अहिंसाकी बुनियाद पर चलनेवाली राज्य-व्यवस्था कायम नहीं हो सकती।"*

गांधीजीने अहिंसाके पालन और आर्थिक समानताके बीचका सम्बन्ध स्पष्ट रूपसे समझ लिया था। तब आर्थिक समानताके लिअे काम किये बिना हम अहिंसाके पालनकी आशा कैसे कर सकते हैं?

गांधीजीकी यह आशा थी कि "आजाद हिन्दुस्तानमें नओी दिल्लीके महलों और अुनकी बगलमें बसी हुओी गरीब मजदूर-बस्तियोंके टूटे-फूटे झोंपड़ोंके बीचका दर्दनाक फर्क अेक दिनको भी नहीं टिकेगा।" (रचनात्मक कार्यक्रम) अुन्होंने यह मान लिया था कि स्वराज्यके बाद जमीन पर राज्यका अधिकार रहेगा; सरकारकी बागडोर अुन लोगोंके हाथमें होगी, जिनकी अिस आदर्शमें श्रद्धा होगी; और यह कि लोकमतको तालीम मिल चुकी है और वह लगभग तैयार है। (हरिजन, २९-१२-'५१; पृ० ३७९ — 'जमीन बांटनेके बारेमें बापूके विचार') लेकिन आज हम कहां हैं?

चूंकि भारत-सरकार गांधीजी द्वारा प्रतिपादित आर्थिक समानताके सिद्धान्तसे दूर जा रही है, अिसलिअे स्वभावत: अुसे अहिंसाके सिद्धान्तसे भी दूर जाना चाहिये। हिंसा अेक अैसा आधार है, जो सामाजिक सम्बन्धोंमें असमानतायें बनाये रखता है, खास करके आर्थिक असमानतायें। और हिंसा तब तक नहीं मिटाओी जा सकती, जब तक मौजूदा अर्थ-व्यवस्थामें सुधार नहीं किया जाता।

अिसलिअे अहिंसाके पुजारियोंका सबसे मुख्य कर्तव्य यह है कि वे सामाजिक सम्बन्धोंमें हिंसाकी वृद्धिकी शिकायत करनेके बजाय आर्थिक समानताकी स्थापनाके लिअे काम करें। भारतमें आर्थिक समानताके लिअे काम करनेका अर्थ होगा विकेन्द्रित अर्थरचना, ग्राम प्रजातंत्र और समाजीकरण। हालमें ही लोकसभाने समाजवादके पक्षमें अपना मत प्रकट किया है। शांतिवादियोंको सरकार पर देशमें अिस सिद्धान्तका अमल करनेके लिअे दबाव डालना चाहिये।

४-१-'५५ गोरा

[आवड़ी-कांग्रेसने यह निर्णय किया है कि हमारा ध्येय भारतमें समाजवादी ढंगकी व्यवस्था कायम करना है। अुसका अर्थ समानता स्थापित करना ही होता है। लेखकका यह कहना सही है कि विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था वगैराके जरिये देशके प्रत्येक नागरिकको काम देनेसे ही आर्थिक समानता कायम की जा सकती है। मैं यहां अितना और जोड़ दूं कि अिस ध्येयकी सिद्धिके लिअे हमें अेक काम और करना होगा। वह यह कि देशके सारे लोगोंको बुनियादी तालीमकी पद्धतिसे शिक्षा देनेके लिअे हमें अपनी मौजूदा शिक्षा-पद्धतिका पुनर्गठन करना चाहिये।

२१-२-'५५ — म० प्र०]

(अंग्रेजीसे)

आठवें दरजेमें अंग्रेजीका शिक्षण

दरजा पांच, छै और सातमें स्कूलके घंटोंके बाहर अंग्रेजीकी पढ़ाओीके बारेमें बम्बओी सरकारके सरक्युलरके निस्बत मैंने 'बिना मांगी सलाह' शीर्षक जो नोट लिखा था (हरिजनसेवक, ५ फरवरी, १९५५), अुसके सम्बन्धमें अतिरिक्त जानकारी प्राप्त हुओी है। मुझे मालूम हुआ है कि अिन दरजोंमें ४० मिनटके हरअेक पीरियडके ५ मिनट कम करके, कामके घंटे कम कर दिये जाते हैं। जाहिर है कि यह बात बहुत अजीब है, क्योंकि स्कूलके बाकी दरजोंमें पीरियड ४० मिनटके ही होंगे, जिससे स्कूलके व्यवस्थापकोंको अकारण असुविधा होगी। अेक भाओी पूछते हैं कि अैसी हालतमें क्या यह अुचित नहीं होगा कि टाअिम-टेबलके बाहर कही जानेवाली यह अंग्रेजीकी पढ़ाओी भी नियमित पढ़ाओीके भीतर ले ली जाय और अुसे समय दिया जाय? चूंकि शिक्षा-विभागने पीरियडोंका समय ५ मिनट कम करनेका कोओी अुचित कारण नहीं दिया है, अिसलिअे मैं मानता हूं कि पत्रलेखकका कथन ठीक है।

अेक मित्रने शिक्षा-विभागके अिस कदमके बारेमें और जानकारी दी है। वे लिखते हैं कि बम्बओी प्रान्तके शिक्षा-संचालकसे पूछा गया था कि आठवें दरजेमें अिस हालतमें कुछ विद्यार्थी तो अैसे होंगे जिन्होंने दरजा पांच, छै और सातमें स्कूलके घंटोंके बाहर अंग्रेजी पढ़ी होगी और कुछ अैसे होंगे जिन्होंने नहीं पढ़ी होगी, तब अुक्त दरजेमें अंग्रेजीका अभ्यासक्रम क्या हो? शिक्षा-संचालकने अिस प्रश्नके जवाबमें यह लिखा है:

> जिन विद्यार्थियोंने दरजा पांच, छै और सातमें स्कूलके घंटोंके बाहर अैच्छिक रूपसे अंग्रेजी पढ़ी होगी, अुनके दरजा आठमें आने पर अुनका कोओी अलग वर्ग नहीं बनाया जायगा। अिन विद्यार्थियोंको भी अंग्रेजीका वही पाठ्यक्रम पूरा करना होगा, जो दरजा आठसे ग्यारह तकके लिअे निर्धारित है।

तो फिर सवाल अुठता है कि शिक्षा-संचालक महोदय स्कूलोंको यह 'बिना मांगी सलाह' क्यों देते हैं कि वे चाहें तो दरजा

* रचनात्मक कार्यक्रमका १३ वां मुद्दा — आर्थिक समानता।

www.vinoba.in

पांच, छै और सातमें स्कूलके घंटोंके बाहर अैच्छिक अंग्रेजीकी पढ़ाअीकी व्यवस्था कर सकते हैं? और पीरियडोंका समय क्यों कम किया है? हम आशा करते हैं कि शिक्षा-संचालक अिस मुद्देका स्पष्टीकरण करेंगे और विद्यार्थियों तथा स्कूलके व्यवस्थापकोंके लिअे अिस कदमके कारण जो गड़बड़ी पैदा हो गअी है अुसे दूर करेंगे।

१८-३-'५५ मगनभाई देसाई
(अंग्रेजीसे)

हरिजनसेवक

२६ मार्च १९५५

देशव्यापी शराबबन्दीकी योजना

हम अिस बातके लिअे अपने-आपको बधाअी दे सकते हैं कि योजना-कमीशन आखिर अग्रवाल शराबबन्दी जांच-समितिकी नियुक्ति कर सका है और समिति तुरन्त यह काम शुरू करनेवाली है। जैसा कि अुस दिन समितिके अध्यक्ष श्री श्रीमन्नारायण अग्रवालने अेक अखबारी निवेदनमें कहा, समिति अगले जून या जुलाअीके अन्त तक अपनी रिपोर्ट पेश कर देनेकी आशा रखती है। अुन्होंने आगे कहा कि रिपोर्ट पेश हो जानेके बाद यह आशा रखी जाती है कि केन्द्रीय सरकार अपनी सिफारिशें राज्य-सरकारोंके पास भेजेगी, ताकि वे २ अक्तूबर, आगामी गांधी-जयंती, को शराबबन्दीके सम्बन्धमें अपनी नीति जाहिर कर सकें। अगर अैसा हुआ, और हमें बड़ी आशा है कि अैसा होगा, तो निश्चित ही गांधीजी — भले वे कहीं भी हों — जन्मदिनकी अिस भेंटके लिअे हमें धन्यवाद देंगे। देरसे अुठाया जाने पर भी अिस कदमका हमेशा ही स्वागत होगा।

यह भी बड़ी अच्छी बात है कि श्री अग्रवालने फिरसे यह स्पष्ट कर दिया कि यह जांच-समिति शराबबन्दीके 'गुण-दोषों' का विचार करनेके लिअे नियुक्त नहीं की गअी है। बल्कि, अुन्होंने कहा, अिसका काम होगा विभिन्न राज्य-सरकारों द्वारा शराबबन्दीको आगे बढ़ानके लिअे, जो कि भारतीय संविधानकी धारा ४७ के अनुसार अुनका वैधानिक कर्तव्य है, अपनाये गये अुपायोंके सम्बन्धमें प्राप्त अनुभवोंकी जांच करना तथा अुस कर्तव्यके पालनमें आनेवाली व्यावहारिक कठिनाअियों — शासनिक, आर्थिक, सामाजिक आदि — का विश्लेषण करना।

समितिसे यह भी आशा रखी जाती है कि वह राष्ट्रीय आधार पर शराबबन्दीके कार्यक्रमकी सिफारिश करेगी और अिस कार्यक्रम पर अमल करनेका ढंग, मंजिलें और तंत्र भी सूचित करेगी।

अिस अुद्देश्यको ध्यानमें रखकर समितिने सरकारी अधिकारियों और गैर-सरकारी लोगोंके पास अेक प्रश्नावली भेजी है और अुसके अुत्तर मांगे हैं।

यह प्रश्नावली बहुत व्यापक है, जिसमें अिस समस्याके विभिन्न पहलू आ जाते हैं। अुदाहरणके लिअे, औद्योगिक क्षेत्रमें काम करनेवाली और दूसरी शराब पीनेवाली आबादी पर शराबबन्दीका असर, नाजायज तौर पर शराब बनाना, अिस नीति पर अमल करनेके लिअे आवश्यक शासनतंत्र और न्यायतंत्र, शराबकी लतमें बढ़ती या घटती — खास करके स्त्रियों और विद्यार्थियोंमें, जनताका सहकार, बेकारीका प्रश्न, और अन्तमें शराबकी आय बन्द हो जानेसे राज्योंकी आय पर पड़नवाला असर।

अन्तमें यह कहकर कि कल्याण-राज्यके लिअे अखिल भारतीय योजना बनानकी दृष्टिसे शराबबन्दीका प्रश्न हाथमें लेना अच्छी बात है, अिन विषयोंकी चर्चा मैं आगेके लिअे छोड़ देता हूं। चूंकि यह प्रश्न राज्यका विषय है, अिसलिअे अिस वैधानिक आदेश पर अमल करनेके लिअे अेक अखिल भारतीय सुसम्बद्ध प्रयत्नकी योजना बनानेवाली संस्थाकी जरूरत थी। स्पष्ट है कि योजना-कमीशन अिसके लिअे सर्वथा अुपयुक्त है। हम आशा करते हैं कि अग्रवाल-समिति अवसरके अनुरूप काम करेगी और अगले ३ बरसमें पूर्ण शराबबन्दीकी अ० भा० योजनाके लिअे अपनी रिपोर्ट पेश करेगी।

यहां यह कहना अुचित होगा कि हमारे देशके अिस महान और अुदात्त प्रयोगका अच्छा असर दूसरे देशों पर भी हो रहा है। अुदाहरणके लिअे, लंका अपने यहां यह सुधार करने जा रहा है। आशा है कि पाकिस्तान और ब्रह्मदेश भी निकट भविष्यमें अिसका अनुकरण करेंगे। जिस तरह मद्रास और बम्बअी राज्यमें मुख्यमंत्रीके नाते काम कर रहे शराबबन्दीके कट्टर समर्थक श्री राजाजी और श्री मोरारजी देसाअीकी श्रद्धा और अटल विश्वासके अूंचे अुदाहरणने हमारे देशके दृष्टिकोणमें प्रशंसनीय और अिष्ट परिवर्तन पैदा कर दिया है, अुसी तरह हम आशा करें कि अगले कुछ बरसोंमें सारा भारत दुनियाको रास्ता दिखायेगा कि शराबबन्दीको मानव-परिवारका नित्य गुण कैसे बनाया जा सकता है। मैं आशा करता हूं कि अुस हालतमें यह विश्व-स्वास्थ्य-संघका हमारे साथ जुड़कर आगे बढ़नेका काम हो जायगा। हमारे अितिहासके आजके क्षणमें अफ्रीको-अेशियन कान्फरेंस जैसी संस्थासे अिस प्रश्नमें जानेकी आशा नहीं रखी जा सकती। लेकिन अनुकूल समय आने पर अिस प्रश्नको अुसके क्षेत्रमें अवश्य लाया जा सकेगा। यह सब पूर्णतया अिस बात पर निर्भर करता है कि हम भारतमें देशव्यापी शराबबन्दी करनमें पूरी तरह सफल हों।

१८-३-'५५ मगनभाई देसाई
(अंग्रेजीसे)

अच्छाअी, बुराअी और अहिंसा

"अभी तक युद्ध और क्रान्तियोंमें विजय अुस पक्षकी हुअी है जो ज्यादा संघटित रहा है। यदि किसी समय आपके आन्दोलनके खिलाफ प्रबल प्रतिरोध अुठ खड़ा हुआ, तो आप अुसका मुकाबला किस तरह करेंगे?" यह प्रश्न विनोबाजीसे अेक ब्रिटिश पत्रकारने पूछा। यह भाअी पिछले युद्धमें सैनिक रह चुके हैं और आजकल दुनियाका भ्रमण कर रहे हैं।

विनोबाजीने अुत्तर दिया, "सब कुछ अिस बात पर निर्भर है कि समग्र जीवनके प्रति हमारा दृष्टिकोण क्या है। यदि किसीकी तरफसे विरोध होता है, तो हमें अुसे अपने पक्षमें लानेका प्रयत्न करना होगा। अगर वे हमारी बात सुनते ही नहीं हैं, तो हम अुनकी बुराअीमें अुनके साथ सहयोग करनेसे अिनकार करेंगे। अिससे वे अपनी ताकत खो देंगे। हम अुन्हें अपना शत्रु नहीं मानते। लेकिन हम अच्छाअी और बुराअीमें जरूर भेद करते हैं। हमें अच्छाअीसे सहयोग करना चाहिये और बुराअीसे असहयोग — अैसा असहयोग जो करुणा और प्रेमसे प्रेरित हो। अीसाने कहा है कि 'बुराअीका प्रतिरोध मत करो।' हम अुसमें यह जोड़ते हैं कि 'बुराअीका विरोध बुराअीसे मत करो।' बुराअीका विरोध हमें अच्छाअीके जरिये करना चाहिये, जिस तरह कि प्रकाश अन्धकारका विरोध करता है। ताकत तो प्रकाशमें ही होती है। मैं यह नहीं मानता कि कुछ मनुष्य अेकदम बुरे होते हैं। हमें सद्भावकी वृद्धि करते रहना चाहिये।"

हमारे मित्रको अिस अुत्तरसे पूरा समाधान नहीं हुआ। अुन्होंने फिर पूछा, "अनुभव बताता है कि जब तक लोभ है, लोभी मनुष्य दूसरोंका शोषण करते ही रहेंगे। और अुन्हें केवल कानून

www.vinoba.in

ही — जिसके पीछे हिंसाका बल होता है — रोक सकता है। अहिंसा पर आधारित समाजमें अिन लोभी मनुष्योंको नियंत्रित करनेका क्या अुपाय होगा?"

विनोबाजीने हंसकर पूछा, "जब तक लोभ है! — पर लोभ कब तक रहेगा?" वे अुत्तरके लिअे रुके और जब पत्रकार भाअीको चुप ही देखा, तो बोले, "लोभ तो तभी तक रहता है, जब तक हम अुसे रहने देते हैं। हमसे भिन्न अुसकी कोअी शक्ति नहीं है। जो सज्जन लोग समाजका नेतृत्व करते हैं, वे अगर अहिंसा स्वीकार कर लें, तो सब ठीक हो सकता है। और नेता अच्छे तब होंगे जब वे सर्वानुमतिसे चुने जायंगे, केवल बहुमतसे नहीं। अगर अिस प्रणालीका अनुसरण किया जाय, तो लोभकी वृद्धिके लिअे कोअी गुंजाअिश ही न रह जाय। यह तो आप मानेंगे न कि लोग लोभके ही लिअे — लोभ करनेमें अुन्हें आनन्द आता है अिसलिअे — लोभी नहीं हैं? पैसेकी अर्थव्यवस्थाके कारण ही पैसेके प्रति अितना मोह देखनेमें आता है। अगर कोअी अैसी व्यवस्था हो जिसमें लोगोंको काम और अपने भरण-पोषणके लिअे जो कुछ चाहिये वह सब आसानीसे मिलता रहे, तो ये लोभी मनुष्य ही सज्जन बन जायंगे।"

मित्रकी शंका दूर हो गअी। अिस बार अुन्होंने ज्यादा विशिष्ट प्रश्न किया, "भारतमें अहिंसा पर आश्रित, स्वावलंबी और वर्गविहीन समाजका निर्माण हो भी जाय तो भी वह तभी न टिकेगा, जब कि शेष दुनियामें अिसी तरहके समाज कायम हो जायंगे?"

विनोबाजीने अुत्तर दिया, "नहीं, मैं अिस बातसे सहमत नहीं हूं। मेरी अच्छाअी दूसरों पर निर्भर हो, यह जरूरी नहीं है। अगर मैं समझता हूं कि मेरा रास्ता सही है, तो भले सारी दुनिया विरोध करती रहे, मैं अुसी पर चलूंगा। और अेक-न-अेक दिन दूसरे मेरे पीछे आयंगे ही। आप जो बात कहते हैं, वह कम्युनिस्टोंके अिस विचार जैसी ही है कि केवल रूस और चीनमें कम्युनिज्म होना काफी नहीं है। जब तक सारी दुनिया अुसे स्वीकार नहीं कर लेती, तब तक वह सुरक्षित नहीं है। हम अैसा नहीं मानते। हमारा विश्वास है कि अेक आदमी भी, अगर वह सही रास्ते पर है तो, सारी दुनियाके खिलाफ खड़ा रह सकता है।"

अिस पर हमारे दोस्तने दलील की, "पर समुदायमें तो मनुष्य केवल भौतिक स्वार्थकी भावनासे परिचालित होते हैं। समुदायोंमें कोअी कर्तव्यबोध नहीं होता। अैसी हालतमें आन्तरराष्ट्रीय संबंधोंके क्षेत्रमें सत्याग्रहका प्रयोग किस तरह किया जा सकता है?"

"क्या आप यह कहना चाहते हैं", विनोबाजीने कहा, "कि समुदायबद्ध होने पर सज्जन दुर्जन बन जाते हैं?" थोड़ा रुककर अुन्होंने फिर कहा, "यह कैसे हो सकता है? अगर दो अच्छे आदमी मिलते हैं, तो अुसका नतीजा यही होगा कि अच्छाअी बढ़ेगी, अुसकी ताकत दुगुनी हो जायगी। लेकिन यह खयाल कि वे बुराअी चलने देंगे, सही नहीं है। आप यह कह सकते हैं कि कर्तव्यबोध व्यक्तियोंमें ही होता है, व्यक्तियोंसे अलग सरकारों या सेनाओंमें कोअी कर्तव्यबोध नहीं होता। लेकिन सरकारों और सेनाओंमें आखिर व्यक्ति तो होते ही हैं। व्यक्तियोंसे अलग अुनकी कल्पना नहीं की जा सकती। अिसके सिवा, 'सामाजिक कर्तव्यबोध' नामकी चीज होती है, यह तो आप जानते हैं। सामाजिक कर्तव्यबोध क्या है? — शताब्दियोंकी संगृहीत सामुदायिक अच्छाअीसे ही अुसका निर्माण होता है। अिसलिअे मुझे लगता है कि आपका खयाल सही नहीं है।"

प्रश्नके दूसरे हिस्सेके विषयमें विनोबाजीने कहा, "आजकल राष्ट्र अेक-दूसरेसे बहुत डर रहे हैं। अमेरिकाको लगता है कि वह काफी बलवान नहीं है। वहां रूसको लगता है कि अमेरिकाकी ताकत बहुत बढ़ती जा रही है। वे डरके वातावरणमें रहते हैं। यह अेक दुष्ट चक्र है जिसे हमें तोड़ना है। अिन दो शक्तिशाली राष्ट्रोंमें से कोअी भी यदि अपने सारे हथियार अपने ही हाथसे नष्ट कर डालनेका साहस दिखाये, तो अुससे अहिंसाका रास्ता खुल जायगा और दुनियाको नेतृत्व मिलेगा। मैं अुम्मीद करता हूं कि वे अिस राह पर शीघ्र ही आयंगे।"

हमारे मित्रने पूछा, "जो देश अुद्योग और व्यवसाय पर आधार रखते हैं, अुनके जीवनका आधार अहिंसा कैसे हो सकती है? अुद्योग और व्यवसायके मूलमें ही लोभ है और अुनकी नींव शोषण तथा प्रतियोगिता पर है।"

विनोबाजीने अुत्तर दिया, "दुनियामें अैसा कोअी भी देश नहीं है, जो अन्न पैदा न करता हो। हरअेक राष्ट्र अपनी खेतीका विकास कर सकता है। और अैसा क्यों मानना चाहिये कि अुद्योग और व्यवसाय शोषण और प्रतियोगिताके ही आधार पर चल सकते हैं? अुद्योगका मतलब है अुन वस्तुओंकी पूर्ति, जो हमारे पास नहीं हैं। और व्यवसाय है दूसरोंकी सहायताका प्रयत्न। मैं नहीं मानता कि अुनकी नींव शोषण और प्रतियोगिता पर ही होनी चाहिये। मेरा विचार अिससे अुलटा है। जैसा कि मैंने आपसे पहले कहा, यदि मौजूदा अर्थ-व्यवस्था बदल दी जाय और पैसेकी जगह अुसमें मानवताका महत्त्व कायम किया जाय, तो परिस्थितियां बिलकुल बदल जायंगी। भूदान-यज्ञके द्वारा हम अिसी लक्ष्यकी प्राप्तिके लिअे कोशिश कर रहे हैं।"

पत्रकार भाअीका अन्तिम प्रश्न था, "दुनिया पर प्रभुता हासिल करनेके लिअे चल रहे प्रयत्नोंके बीचमें भारत अपनी आजादी किस तरह कायम रख सकेगा?"

"अुसके लिअे चिन्ता करनेका कोअी कारण नहीं है। हमें खुद ज्यादा अच्छे बनने और दूसरोंको वैसा बननेमें सहायता देनेका प्रयत्न करते रहना चाहिये। अितना हो तो चिन्ताकी कोअी बात नहीं। बुरे लोगोंको भी, जब वे अपना संघटन करना चाहते हैं, अपनी बुराअी छोड़ना पड़ती है। क्या आप भी यह नहीं मानते कि चोरोंकी भी अपनी नीति होती है?"

हमारे सैनिक रह चुके पत्रकार मित्रने स्वीकृति-सूचक सिर हिलाया। विनोबाने आगे कहा, "समुदायबद्ध अच्छाअी धीरे-धीरे बढ़ेगी। और अनियंत्रित बुराअी अिस तरह घटेगी।"

अपनी बातका अुपसंहार करते हुअे विनोबाजीने कहा, "मैं आपसे अेक निर्णायक सवाल करता हूं — सज्जनोंका संघटन हो तो अच्छाअी बढ़ेगी, और दुर्जनोंका संघटन हो तो बुराअी घटेगी।" थोड़ा रुककर विनोबाने हंसते हुअे कहा, "अैसा है या नहीं?"

हमारे अनुभवी मित्रने स्वीकार किया — "अवश्य।"

१२–२–'५५ **सुरेश रामभाअी**

(अंग्रेजीसे)

हमारे नये प्रकाशन

हरिजनसेवकोंके लिअे

लेखक : **गांधीजी**; संपा० **भारतन् कुमारप्पा**

कीमत ०–६–० डाकखर्च ०–३–०

अस्पृश्यता

लेखक : **गांधीजी**; संपा० **भारतन् कुमारप्पा**

कीमत ०–३–० डाकखर्च ०–२–०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–१४

www.vinoba.in

श्री नवजीवन संस्थाका ३१ दिसम्बर, १९५४ के दिनका बैलेन्सशीट

जमा

रु० आ०पा०		
८,५६,५७७-१५-९		श्री आय-व्यय खाते पिछले बैलेन्सशीटके मुताबिक बाकी
१,८७,०९५-०-०		श्री मशीन-घिसाओ फंड खाते
	१,५२,०९५-०-०	पिछले बैलेन्सशीटके मुताबिक बाकी
	३५,०००-०-०	चालू सालमें घिसाओके जमा किये
१,१७,९८८-६-३		श्री प्रोविडेन्ट फंडकी रकम खाते
१,९७,८२१-१५-११		श्री मकान-फंड खाते
	१,६५,२१९-२-८	पिछले बैलेन्सशीटके मुताबिक बाकी
	३२,६०२-१३-३	चालू सालमें घिसाओके जमा किये
१,३५,१४७-०-४		श्री अमानत खाते
	६,७५४-१२-९	श्री हरिजन-सेवक-संघ, दिल्लीको पू० गांधीजीके वसीयतनामेके मुताबिक वार्षिक हिसाबसे देनेकी रकम
	१,२७,७७६-१०-१	साप्ताहिकोंके चन्देकी, कापीराअिट वगैराकी अमानत देनी बाकी
	४७-१४-०	वेतन अमानत
	५६७-११-६	बिक्री-कर अमानत
२१,११,५०८-०-०		श्री कर्ज
	९,८२,८६९-२-०	श्री महादेव देसाओ स्मारक ट्रस्टसे प्लाट नं० ९६ की जमीन और अुस पर बंधे हुओ मकानोंकी अिक्वीटेबल गिरवी पर ब्याजसहित।
	११,२८,६३८-१४-०	विविध व्यक्तियोंसे बिना जमानतकी ब्याजसहित ली गओ रकम प्रमाणित यादीके अधीन
२,२२,९०१-१०-३		श्री जिम्मेदारी
	५३,११६-१३-९	खर्च पेटे
	१,६९,७८४-१२-६	पुस्तक-अमानत, विविध कर्ज वगैरा
रु० ३८,२९,०४०-०-६		

नामे

रु० आ०पा०			
३,२३,१६६-९-०			श्री जमीन खरीदीके खरीद कीमत पर
	३,१२,१५०-९-०		पिछले बलेन्सशीटके मुताबिक बाकी
	११,०१६-०-०		चालू सालमें बढ़ती की
१६,४२,२११-१-६			श्री मकान खाते लागत कीमत पर पिछले बलेन्सशीटके मुताबिक बाकी
३९,४००-०-०			श्री सामान-असबाब
	४०,०००-०-०		पिछले बैलेन्सशीटके मुताबिक बाकी
	२,०७२-१३-६		चालू सालमें बढ़ती की
	४२,०७२-१३-६		
	— २,६७२-१३-६		
		२३-१५-६	विविध बिक्रीके
		२,६४८-१४-०	चालू सालकी घिसाओ
३,४७,००५-४-६			श्री मशीन-विभागके
	३,१६,५८५-११-६		पिछले बलेन्सशीटके मुताबिक बाकी
	३०,४१९-९-०		चालू सालमें बढ़ती की
९१,४९८-२-३			श्री टाअिप-विभागके
	९१,०५८-४-९		पिछले बैलेन्सशीटके मुताबिक बाकी
	२१,९९८-१-६		चालू सालमें बढ़ती की
	१,१३,०५६-६-३		
	— २१,५५८-४-०		
		१,५५८-४-०	विविध बिक्रीके
		२०,०००-०-०	चालू सालकी घिसाओ
१२,५००-०-०			श्री टाअिप-फाअुन्डरीके माल वगैराके तथा चालू सालमें ट्रस्टकी फाअुन्डरीमें जो टाअिप वगैरा बनाया गया, अुसकी कीमतके व्यवस्थापक-ट्रस्टी द्वारा आंके हुओ मूल्यकी प्रमाणित यादीके मुताबिक
९,५७,०९०-०-०			श्री मालका स्टाक — व्यवस्थापक-ट्रस्टीकी प्रमाणित यादीके मुताबिक लागत कीमतके आधार पर
	७,७३,०००-०-०		पुस्तकोंका स्टाक
	१,७२,०००-०-०		कागजका स्टाक
	५,८००-०-०		प्रेस-मशीन स्टाक
	४,८००-०-०		जिल्द-बंधाओ सामानका स्टाक
	१,४९०-०-०		खादीका स्टाक
१,१९,३६२-३-०			श्री अनुवादकोंको तथा मालकी अमानत वगैरा खातेकी रकमें
१,५८,३१२-८-०			दूसरोंसे वसूल करनेकी रकम : बगैर जमानतकी
	१,५२,०७७-५-०		पुस्तक-बिक्री वगैराकी वसूल की जानेवाली विविध रकमें
	४,२००-०-०		प्रोविडेन्ट फंडमें से कर्मचारियोंको दिया गया कर्ज

www.vinoba.in

७६५–३–०	कर्मचारियोंसे वसूल करनेका विविध कर्ज
१,२७०–०–०	दिसंबरके मकान भाड़ेकी वसूली बाकी
८,०३९–४–०	श्री मकानभाड़के तथा सरकारके पास डाक-तार वगैरा विभागोंकी अमानतके
१,१०,०१५–०–०	पूंजी :
१,१०,०००–०–०	अहमदाबाद पी० को० ऑ० बैंक लि० के फिक्स्ड डिपोजिटमें प्रोविडेन्ट-फंडकी रकम जमा
१५–०–०	अहमदाबाद पी० को० ऑ० बैंक लि० का १ शेयर पूरी रकम भरकर खरीदा हुआ
१,६०१-१३-६	फिक्स्ड डिपोजिट पर चढ़े हुअे ब्याजके
१८,८३८–२–९	रोकड़ तथा बैंकमें : —
१४,९०६-११-०	बैंकोंके चालू खातेमें जमा
५४०–०–०	डाककी टिकटें
३,३९१–७–९	नकद बाकी हाथ पर : मेलके अनुसार
३८,२९,०४०–०–६	

हमने श्री नवजीवन संस्थाका ता० ३१–१२–'५४ के दिन पूरे हुअे वर्षका अूपरका बैलेन्सशीट और साथका अुसी दिन पूरे हुअे वर्षके आय-व्ययका हिसाब हिसाबबहियोंके साथ जांचा है। जिसमें हमने जरूरी स्पष्टीकरण और जानकारी हासिल की है। हम मानते हैं कि हमें दिये गये स्पष्टीकरणों और संस्थाकी हिसाब-बहियोंके मुताबिक अूपरका बैलेन्सशीट संस्थाकी सच्ची स्थिति बताता है।

ता० २८–२–१९५५
५१, महात्मा गांधी रोड,
फोर्ट, बम्बअी

नानुभाओकी कंपनी
चार्टर्ड अेकाअुन्टेन्ट्स

रविशंकर दवे
हिसाबनवीस

जीवणजी डा० देसाअी
व्यवस्थापक-ट्रस्टी

श्री नवजीवन संस्थाका ३१ दिसम्बर, १९५४ के दिन पूरे हुअे वर्षके आय-व्ययका हिसाब

जमा

रु० आ०पा०	
३,९६,७४२–०–६	श्री मुद्रणालय विभागकी छपाअी, कागज-खरीदी, पुस्तकोंकी जिल्द-बंधाअी, टाअिप-फाअुण्डरी वगैरासे हुअी कुल आय
७८,८००–६–३	श्री पुस्तक बिक्री विभागकी कुल आय
१६,९१८–२–०	श्री प्रूफरीडिंग और अनुवाद-विभागकी कुल आय
१५,४९३-१३-३	श्री पुस्तक पुरस्कार (रायल्टी) विभागकी कुल आय
२,१४०–६–३	श्री मकान-भाड़ा विभागकी कुल आय
१७,२१४-११-०	मकान-भाड़ेकी कुल आय जिसमें से बाद किये :—
१५,०७४–४–९	म्यु० टैक्स तथा शाखाओंके मकान-भाड़े वगैराके खर्चके
१,३२७–२–३	श्री पत्र-विभागकी कुल आय — वेतन, डाक-तार, पोस्टेज, स्टेशनरी वगैराका खर्च छोड़ कर
७१५–९–६	श्री जमीन, खादी तथा अन्य विविध साधनोंसे हुअी कुल आय
५,१२,१३७–८–०	

नामे

रु० आ०पा०	
२,९३,९८८–०–३	श्री वेतन-खर्चके तथा प्रोविडेन्ट फण्डकी रकमके ब्याजसहित
८,५४१–८–९	श्री डाक-तार, पोस्टेज, रवानगी तथा लायब्रेरी और स्टेशनरी खर्चके
१२,८३०–९–३	श्री टेलीफोन तथा बिजलीकी लाअिटके खर्चके
८,१८४-१३-३	श्री मुसाफिरी, विविध, औषधालय तथा ऑडिटरके मेहनतानेके
४०–५–०	श्री जमीन-मेहसूल खर्चके
५,०६३-१४-०	श्री बीमा-प्रीमियम खर्चके
२९,९६६–५–०	श्री प्रेस मशीन खर्चके
३,४७३-१०-९	श्री जमीन तथा मकान-मरम्मत खर्चके
५९,७९६-१०-६	श्री ब्याज-बट्टेके —
६६,९२८-१०-०	दिये हुअे ब्याज-बट्टेके
— ७,१३१-१५-६	मिले हुअे ब्याज-बट्टेके
५७,६४८-१४-०	श्री घिसाअी-खर्चके (डिप्रीसियेशन चार्ज)
५५,०००–०–०	मशीनों तथा टाअिपकी घिसाअीके
२,६४८-१४-०	सामान-असबाबकी घिसाअीके
३२,६०२-१३-३	श्री बाकी मकान-घिसाअीके, जो श्री मकान-फण्ड खातेमें बैलेन्सशीटमें ले गये
५,१२,१३७–८–०	

ता० २८–२–१९५५
५१, महात्मा गांधी रोड,
फोर्ट, बम्बअी

नानुभाओकी कंपनी
चार्टर्ड अेकाअुन्टेन्ट्स

रविशंकर दवे
हिसाबनवीस

जीवणजी डा० देसाअी
व्यवस्थापक-ट्रस्टी

www.vinoba.in

गांवोंके लिअे सच्चा अर्थशास्त्र

[हमारी सरकार और अुसकी पंचवर्षीय योजना बनानेवाले अधिकारी लाखोंका नहीं, बल्कि करोड़ोंका अंदाज लगाकर विराट योजनायें तैयार करते हैं। अिसके लिअे पैसा पानेको बजटवाले तरह-तरहके कर जनता पर लगाते हैं। और अुनसे जितना धन अिकट्ठा हो सकता है, अुतना अिकट्ठा करनेके बाद अधिककी जरूरत होती है तो नोट छापने लगते हैं। अिसके लिअे अगर मौजूदा छापखाना काफी न हों तो दूसरा छापखाना खोलनेका विचार करते हैं।

अिन सब बातोंका अटपटा अर्थशास्त्र समझनेवाले ही समझते होंगे। कहा जाता है कि देशमें अिने-गिने लोग ही अिनके हिसाबी ग्रन्थोंको समझ सकते हैं। मतलब यह कि सामान्य प्रजाजनकी दृष्टिसे यह सब मानो अभिमन्युका दुर्भेद्य चक्रव्यूह बन जाता है!

फिर भी यह हमारी समग्र जनताके जीवनका सवाल तो है ही; क्योंकि ये योजनायें और बजट अुसे छूते हैं। जैसे, बजटके जाहिर होते ही चीजोंके भावों और बाजारोंमें अुथल-पुथल और खलबली मच जाती है। अिस कारणसे आम जनताके अज्ञान-सागरको भी अब अिन लहरोंका धक्का पहुंचने लगा है। लोकशाहीकी दृष्टिसे विचार करके कहा जाय, तो अुनके पास भी अिन अटपटी मानी जानेवाली बातोंका सार पहुंचाना देशके लोक-शिक्षणका फर्ज हो जाता है। खगोल-विद्याकी तरह अिस नये अर्थशास्त्रकी बातोंको 'जंतर-मंतर' बना दिया जाय या वे अैसी बन जायं, तो लोकशाहीकी प्रगतिमें रुकावट पैदा होगी।

नये या अर्वाचीन अर्थशास्त्रका जोर पैसे और अुसकी करामातोंमें है। पैसा अुसका अेक मुख्य शस्त्र है। अुसके बल पर वह शास्त्र अभिमन्युका चक्रव्यूह बन जाता है। लेकिन अिसका भी कोअी अिलाज तो करना ही चाहिये।

अिसका तरीका आजके अुस अटपटे अर्थशास्त्रमें खोजने जायंगे तो नहीं मिलेगा। आज वह दुनियाका डूबता शास्त्र हो रहा है। वह लड़ाअियों और वर्ग-संघर्षको जन्म देता है, फिर भी जैसेका तैसा ही रहता है।

अगर समझें तो यह तरीका गांधीजी द्वारा बताये हुअे सर्वोदयके अर्थशास्त्रमें है, जिसे आज विनोबा 'ग्रामोद्योग मूलक भूदान' के जरिये समझाते हैं। श्री रविशंकर महाराजके नीचेके विवेचनको (यह भाग खेड़ा जिला सर्वोदय मेलेमें दिये गये अुनके भाषणसे लिया गया है) अिस दृष्टिसे समझनेका प्रयत्न किया जाय, तो गांवोंकी जनता आसानीसे अिस नये अर्थशास्त्रके दुःखसे बाहर निकल सकती है।

१४-३-'५५ —म० प्र०]

आज पैसा परमेश्वर बन गया है। खेतमें अनाज खूब पका हो तो भी हम कहते हैं कि जहन्नममें जाय अनाज! क्योंकि भाव घट गये हैं।* आज तो चाय-कॉफी पीनेके लिअे हम अनाज, दूध और घी बेचकर पैसे लाते हैं। अेक गांवका हिसाब देखें:

कढाणा गांवकी आबादी ५,५०० है। आप कहते हैं कि पांच-पचीस आदमी चाय नहीं पीते होंगे। लेकिन हम मान लें कि ४,००० आदमी चाय पीते हैं। अब हरअेकके दो कपके हिसाबसे ३ आने लगाये जायं तो रोज रु० ७५० चाय पर खर्च होते हैं। अेक महीनेके रु० २२,५०० होते हैं। गांवकी खेतीमें अेक बार जो अनाज पकता है, अुसीमें से चायका और घरका दूसरा सारा खर्च निकालना होता है। यह कैसे हो सकता है? अैसी हालतमें अगर लोग नंगे-भूखे रहें तो आश्चर्य क्या? हमारी गरीबीका पार नहीं है। अिसलिअे विचारपूर्वक जीना सीखो।

आज हमारे गांवोंके अुद्योग-धन्धे गये और टाटा और बाटा आ गये। टाटावाला वहां बैठे-बैठे कुदाली और फावड़ा भेजता है, अिसलिअे लुहारका धन्धा नष्ट हो गया। बाटावाला मुलायम जूते भेजता है, अिसलिअे गांवके मोचीका धन्धा छिन गया। मिलवाले कातने, पींजने, बुनने, रंगने, छापने, धोनेका सारा काम करते हैं, अिसलिअे पिंजारे, जुलाहे, धोबी, रंगरेज सब बगैर धन्धेवाले हो गये।

हमारे घरोंके पांच धन्धोंमें से अूखल-मूसल, चक्की और चरखा चला गया। लेकिन बड़े माने जानवाले लोगोंके घरोंमें से तो खाना पकाने और पानी भरनेका काम भी चला गया। अुन्होंने पांचों धन्धे खो दिये।

अिसलिअे अब सब लोग विचारपूर्वक जीना सीखें। हाथसे छिन गये धन्धे फिरसे गांवोंमें दाखिल करो। जमीन पर दिलसे काम करो। बांटकर खाओ। बुरी आदतें छोड़ो और शान्तिसे रहो।

गांधीजी यह बात लगातार ३० वर्ष तक कहते रहे। अैसे शिक्षक, गुरु और पैगम्बर मिलने पर भी हम कुछ न सीखें, तो कहना होगा कि हम कुछ नहीं समझे।

(गुजरातीसे) रविशंकर व्यास

* अनाजका भाव गिरनेसे कर्नाटकके कालघाटगी तालुकेके ६ गांवोंकी स्त्रियोंने परिस्थितिका सामना करनेके लिअे अपनी बुद्धिसे क्या किया, अिसकी खबर अखबारोंमें आअी है:— अुन्होंने गांवोंमें चाय, कॉफी, सिगरेट, बीड़ीका बहिष्कार कराया। हर सप्ताह अिन गांवोंमें रु० १००० की चाय-बीड़ी वगैरा खपती थी। कहा जाता है कि यह हवा दूसरे गांवोंमें भी फैल रही है। —म०

रचनात्मक कार्यक्रम
[चौथी बार]
लेखक: गांधीजी; अनु० काशिनाथ त्रिवेदी
कीमत ०-६-० डाकखर्च ०-३-०

शराबबन्दी क्यों?
भारतन् कुमारप्पा
कीमत ०-१०-० डाकखर्च ०-४-०

भावी भारतकी अेक तसवीर
[दूसरी आवृत्ति]
किशोरलाल मशरूवाला
कीमत १-०-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

विषय-सूची

		पृष्ठ
समाजवादी ढंगकी व्यवस्थाका मार्ग	वैकुण्ठभाअी महेता	२५
शांतिकी अेक शर्त	गोरा	२७
आठवें दरजेमें अंग्रेजीका शिक्षण	मगनभाई देसाई	२७
देशव्यापी शराबबंदीकी योजना	मगनभाई देसाई	२८
अच्छाअी, बुराअी और अहिंसा	सुरेश रामभाअी	२८
नवजीवनके वार्षिक आय-व्ययका हिसाब	जीवणजी डा० देसाअी	३०
गांवोंके लिअे सच्चा अर्थशास्त्र	रविशंकर व्यास	३२
सूची: भाग १८ (१९५४-'५५)		(३२ क) १